REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF)
VOLUME - 7 | ISSUE - 3 | DECEMBER – 2017

"जन संचारीय माध्यमों मे हिंदी का स्थान"

डॉ. फैमिदा शब्बीर बिजापूरे
कर्मवीर भाऊराव पाटील महाविद्यालय, पंढरपूर, जि. सोलापूर.

जिस तरह पंछी एक जगह से दूसरी जगह संचार करते है। अपना घौसला बनाने के लिए वे संचार कर–कर तिनका तिनका इकठ्ठा करते है उसी तरह मानव भी संचार प्रिय प्राणी है। वह भी एक जगह पर स्थिर नहीं हो सकता। वह जनसंचार को निम्नलिखित माध्यमों द्वारा अधिक जानकरी हासिल कर तथा अपना मनोरंजन भी करता है।

1. मुद्रित माध्यम :–

मुद्रित माध्यम के अंतर्गत समाचार पत्र पत्रिकाएँ, जर्नल एवं पुस्तके आते है। हम इसे प्रिंट मिडीया भी कहते है। वर्तमान औद्योगिक के विकसित होने के कारण मिडीया भी आकर्षक स्वरूप ग्रहण कर रहा है। समाचारपत्र अपने सामाजिक विज्ञापनोंद्वारा, जनहितकारी विज्ञापनोंद्वारा, स्वास्थ पर्यावरण आदि के प्रति जनसामान्य को प्रबोधन करते है। मुद्रित माध्यम के अन्तर्गत समाचार पत्र–पत्रिकाएँ, जर्नल एवं पुस्तके आती हैं। इसे हम Print Media भी कहते हैं। 1450 में जर्मन में मुद्रण का आविष्कार होते ही, समाचार पत्र विकसित राष्ट्र की आवश्यकता सिद्ध हुए। मानव जाति जितनी ही प्राचीन हमारी संचार प्रक्रिया भी है किन्तु प्रिंट मीडिया के रूप में समाचा पत्रों का पदार्पण भारत में 1780 से हुआ और तबसे चला यह सफर आज प्रौद्योगिकी के विकास के साथ–साथ इंटरनेट संस्करणों तक पहुँच गया है। दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, त्रैमासिक, अर्धवार्षिक, वार्षिक पत्र–पत्रिकाओं के बहुसंस्करण, सोद्य संस्करण बहुत तेजी से प्रत्येक प्रान्त, क्षेत्र और भाषा में अतिक्षिप्रगति ले आ रहे हैं। वर्तमान प्रौद्योगिकी के विकसित होने के कारण प्रिन्ट मीडिया भी आकर्षक स्वरूप ग्रहण कर रहा है। पुस्तकों की बढिया छपाई, पत्र–पत्रिकाओं का आकर्षक लेआउट, साज–सज्जा पाठकों के आकर्षण में इजाफा कर रही हैं। हर विषय और वर्ग हेतु पत्र–पत्रिकाएँ अपनी पूर्ण साज–सज्जा के साथ बाजार में उपलब्ध हैं।

18 वीं शती में मुद्रण और डाक व्यवस्था में सुधार आते ही 19 वीं शती के मध्य समाचार पत्रों की स्थिति में भारी परिवर्तन हुए। समाचार टेलीग्राफ, टेलिफोन के जरिए बडी तीव्रगति से जाते और छपकर रेलमार्ग से कस्बों, गॉवों तक पहुँचने लगे। अंग्रेजी के आगमन के पश्चात प्रेस भारत में अस्तित्व में आया।

भारत में पहला समाचार पत्र कलकत्ता के उपनगर सीरामपुर में खुले प्रति मुद्रणालय द्वारा 29 जनवरी 1780 ई. में जेम्स आगस्ट हिकी ने 'बंगाल गजेट ऑफ कलकत्ता जनरल एडवरटाइजर' नाम से निकाला जिसकी भाषा अंग्रेजी थी। भारतीय भाषाओं का पहला समाचार पत्र बंगाला भाषा में 'संवाद कौमुदी' नाम से (सन् 1820 ई.) प्रकाशित हुआ। हिन्दी का पहला पत्र 'उदन्त मार्तण्ड' नाम से 30 मई 1826 को कलकत्ता से कानपुर निवासी पं. जुगुल किशोर शुक्ल के संपादकत्व एवं प्रकाशकत्व में निकला तथा हिन्दी पत्र 'बनारस अखबार' सन् 1845 में निकला। तब से आज तक की प्रिंट मीडिया की यात्रा में अनेक विध परिवर्तन हुए हैं। समय की मॉग को देखते, पाठकों की अभिरूचि को समझते हुऐ प्रायः सभी प्रमुख समाचार पत्रों ने

विविध रंगों के चित्रों समेत खेल, कला, फिल्म, शेयर, बाजारभाव, राजनीति रंग, सेवायोजन, प्रतियोगिता तैयारी, अभिरूची परीक्षण, महिला रुचियों, बाल रुचियों एवं उनकी समस्याओं आदि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र से सम्बन्धित समाचारों को वर्गीकृत कर स्थान दिया है। साहित्य, नई प्रकाषित एवं शहर में उपलब्ध पुस्तक परिचय, रंग शिल्प, नुक्कड नाटकों, मुशायरो आदि का कवरेज भी समाज की आवश्यकता देखते हुए हो रहा है।

समाचार पत्र अपने सामाजिक विज्ञापनों द्वारा स्वास्थ, पर्यावरण आदि के प्रति जन सामान्य को जागरूक तो करते हीं हैं साथ ही उनकी महती भूमिका सांस्कृतिक मूल्यों को स्थापित एवं जनमत सशक्तीकरण करने में विशेष सहायक सिद्ध हुई है। नव इलेक्ट्रानिकी माध्यमों के आ जाने पर भी आज प्रिंट मीडिया पिछडा नहीं है वे अन्य माध्यमों की अपेक्षा समाजचारों को अधिक विस्तृत, विश्लेषित करते हुए देते हैं एवं उनकी विश्वसनीयता भी अन्य माध्यमों से अधिक होती है। अतः आज भी उसकी यथावत् उपयोगिता सिद्ध हो रही है।

2. इलेक्ट्रॉनिक माध्यम :–

इलेक्ट्रॉनिक माध्यम टेलिफोन, टेलिप्रिंटर, टेलेक्स, फॅक्स यह दूरसंचार के अत्यंत प्रचलित साधन है। इनके अतिरिक्त इंटरकॉम, पेजर, एसटीडी, आयएसडी, वीडीओफोन, सेल्युलर टेलिफोन, इंटरनेट, टेलीटेक्स आदि. यह दूरसंचार के अत्यन्त प्रचलित साधन हैं। इन साधनों को उपयोगी बनाने के लिए संदेशों को तार अथवा रेडियो की तरंगो द्वारा भेजा जाता है। टेलीग्राफ का ही विकसित रूप टेलीप्रिन्टर है। टेलेक्स टेलीप्रिन्टरों को नियन्त्रित करने के लिए बनाये गये केन्द्र हैं। फैक्स टेलीग्राफी के क्षेत्र में अति आधुनिक उपलब्धि हैं। संक्षेप में इनका परिचय एवं कार्यप्रणाली का उल्लेख यहॉ किया जा रहा है।

टेलीग्राफ :

टेलीग्राफ आधुनिक दूरसंचार प्रणाली का आधुनिक साधन है। इसके आविष्कार का श्रेय इंग्लैण्ड के विलियम एफ. कु, चार्ल्स व्हीट स्टोन एवं अमरीका के सेमुअल मोर्स को जाता है। वास्तविकता यह है कि सैमुअल मोर्स के द्वारा कुक एवं स्टोन द्वारा आविष्कारित प्रणाली को सरल बनाया गया। सन् 1815 में इटली के प्रसिद्ध भौतिक शास्त्री – मुगलील्मों मार्कोनी द्वारा की गयी बेतार के तार की खोज ने, इस संयंत्र को परिपक्वता प्रदान की और वायरलेस, टेलीग्राफी पद्धतीयॉ सामने आयीं। हालांकि इससे पूर्व 24 मई, सन् 1855 में वाशिंगटन से वाल्टीमोर के मध्य पहला संदेष – व्हाट हैथ गॉड रॉट' अर्थात 'वाह रे ईश्वर तेरी सृष्टि, भेजा गया था। मार्कोनी ने 28 मार्च 1888 में इंग्लैण्ड के डोवर नामक स्थान से फ्रांस के विमरौक्स के बीच में टेलीग्राफ संदेश भेजा था।

टेलेक्स :

'टेलेक्स' दूरसंचार के क्षेत्र में बहुत ही उपयोगी सिद्ध हुआ है। विश्व भर से आने वाले संदेश, समाचार–पत्र कार्यालयों में टेलेक्स द्वारा ही प्राप्त होते हैं। इनका उपयोग विभिन्न उद्योगों, डाक एवं मौसम प्रभाग को निर्देश देने के लिए भी होता है। तार विभाग ने जनता तथा सरकारी कामकाज दोनों ही दृष्टि से टेलेक्स की व्यवस्था की है। 'टेलेक्स' (Talax) षब्द 'टेलिप्रिन्टर' एक्सचेंज का संक्षिप्त रूप है। आधुनिक टेलेक्स को हम टेलीप्रिन्टर, टेलीग्राफ और टेलीफोन का मिला जुला रूप कह सकते हैं। इस प्रणाली में प्रयोक्ता मुँह से बातचीत नहीं करता बल्कि अपना संदेश टाइप रूप में भेज या प्राप्त कर सकता है। एक टैलेक्स एक्सचेंज के माध्यम से संसार के किसी भी टेलेक्स एक्सचेंज से सम्पर्क किया जा सकता है। विश्व का पहला विद्युतचलित टेलेक्स सन 1633 में जर्मनी में स्थापित हुआ।

प्रत्येक टेलेक्स का अपना एक नम्बर होता है। अपने टेलेक्स से इस नम्बर को डायल करके, सम्पर्क स्थापित करके संदेश भेजा जा सकता है।

टेलीप्रिन्टर :

टेलीप्रिन्टर दूरसंचार के क्षेत्र में वरदान सिद्ध हुआ है। इसे तारघरों, समाचारपत्र, कार्यालयों और सरकारी संस्थानों में प्रयोग किया जाता है। इसका आविष्कार 1674 में फ्रांस के एमिल बॉडॉटने किया। सन् 1627 में टेलीप्रिन्टर ने विधिवत कार्य प्रारम्भ किया। यह बिजली से चलने वालाऐसा पत्र है जो टाइप द्वारा टेलीग्राफ परिपथ पर अथवा रेडियो तरंगों द्वारा संदेश भेजने और प्राप्त करने का कार्य करता है। इस यंत्र पर एक ही बार में कई संदेश एक साथ भेजे जा सकते हैं।

देखने में यह एक टाइपरायटर जैसा प्रतीत होता है लेकिन इसकी आन्तरिक संरचना जटिल होती है। इसमें एक 'की बोर्ड' (Key Board) या कुँजीपटल होता है जिसमें अंग्रेजी के 26 अक्षर हिन्दी के मात्रा सहित लगभग 60 अक्षर तथा 0–9 तक तक संख्याएँ तथा विराम, कॉमा आदि चिन्ह होते हैं।

फैक्स :

'फैक्स' एक ऐसी प्रणाली है जिसमें चित्र, आकृतियों की हूबहू नकल या फोटो कापी एक स्थान से दूसरे स्थान पर आसानी से भेजी जा सकती है। इस तकनीक को फेसीमाईल, टेलीफोटो, ट्रान्समिशन, टेलीकापियर आदि नामों से भी जाना जाता है।

'फैक्स' (Fax) शब्द लैटिंन भाषा के दो शब्दों 'फैकर एवं सिमिलिस' का सम्मिलित शब्द है। इसकी कार्य प्रणाली को देखकर इसे 'फार अवे रिरॉक्स' कहा जाता है। फैक्स मशीन की सम्पूर्ण कार्य प्रणाली सारांशतः तीन चरणों में पूर्ण होती है।

1. वांछित कागजात को पढना और उसमें लिखे संदेश या बने हुए चित्र को इलेक्ट्रानिक तरंगों में बदलना।
2. उन इलेक्ट्रिानिक तरंगो को टेलीफोन के तारों द्वारा दूसरे स्थान पर लगी फैक्स मशीन तक पहुँचाना।
3. दूसरे स्थान पर लगी फैक्स मशीन द्वारा प्रेषित इलेक्ट्रिक तरंगो को ग्रहण करके पुनः एक विशेष प्रकार के कागज पर हूबहू प्रिन्ट कर देना।

टेलीफोन :

'टेलीफोन' ग्रीक भाषा का शब्द है। 'टेली' का अर्थ है दूर और फोन का अर्थ है – 'ध्वनि'। इस प्रकार टेलीफोन का अर्थ हुआ – ध्वनि को दूर तक भेजना।

टेलीफोन का आविष्कार अमरीका के स्वर–शरीर विज्ञान के आचार्य अलेक्जेन्डर ग्राहम बैल व्दारा सन 1876 में किया गया । सन 1877 अमरीका का ही प्रसिध्द वैज्ञानिक थोमस अलवा एडिसन ने इसमें अनेक सुधार किए । कलान्तर में अलग–अलग तारो से जुडे टेलीफोन में सन 1923 से डायलिंग सिस्टम, सन 1941 सें पुश बटन सिस्टम विकसित हुआ ।1960 में इलेक्ट्रानिक एक्सचेंज की स्थापना हुई । भारत में सर्वप्रथम 1881–82 में कलकत्ता शहर में 50 लाइनों वाले टेलीफोन एक्सचेंज की स्थापना की गई ।1913–14 में शिमला में पहला स्वचालित टेलीफोन एक्सचेंज शुरू हुआ । सन 1960 में लखनऊ और कानपुर के बीच सर्वप्रथम एस.टी.डी. सेवा प्रारंभ की गई ।

कोर्डलेस टेलीफोन :

कोर्डलेस का तात्पर्य है कि तार विहीन टेलीफोन. इस प्रकार के फोन से यह सुविधा होती है कि किसी भी समय एक निश्चित दायरे में रहते हुए. संदेश प्राप्त किया जा सकता है ।

इन्टरकॉम :

इन्टरकॉम टेलीफोन के अन्तर्गत मुख्य टेलीफोन से अन्य टेलीफोन जुडे हुए होते हैं । जिससे व्यक्ति को मुख्य टेलीफोन कें पास उठकर नही आना पडता है । अगर उसके पास इन्टरकॉम उपलब्ध हैं तो वह उसी स्थान से बात कर सकता हैं । दप्तरों,उद्योगों के लिए यह प्रणाली अत्यंत लाभदायक रही हैं ।

पेजर :

यह एकतरका संदेश प्राप्त करने वाला एक बेतार उपकरण हैं जो बेट्री से चलता हैं ।इस प्रणाली का विकास चिकित्सकों के लिए किया गया था । पेजर सुविधा वाले व्यक्ती को एक निश्चित दायरे में रखते हुए आवश्यक संदेश लिखित रू‍प में पहुँचाया जा सकता हैं । पेजर के अन्तर्गत एक स्क्रीन होती हैं जिसे व्यक्ती अपनी बेल्ट आदि में लगा सकता है । प्रत्येक पेजर का टेलीफोन की भॉति एक कोड नम्बर होता हैं । व्यक्ती व्दारा टेलीफोन से पेजर कोड नम्बर डायल करने पर पेजर रखने वाले व्यक्ति के यंत्र में से आवाज आनी प्रारभ्भ हो जाती हैं और संदेश लिखित रूप से सम्बधित आम जीवन में भी हो गया हैं ।

एस.टी.डी. :

एस.टी.डी. सबस्क्रइबर ट्रैक डायलिंग का संक्षेप है । तात्पर्य यह है कि एस.टी.डी. का सामान्य अर्थ–घुमा–घुमाकर काल करने वाले ग्राहक । इस प्रणाली में ग्राहक ऐसे टेलीफोन से जिसमे एस.टी.डी. सुविधा

हो, के व्दारा नम्बर घुमाकर मनचाहे उक्त सुविधा वाले स्थान पर बातचीत कर सकता है । इस प्रणाली में प्रत्येक शहर को अलग–अलग कोंडो के म । माध्यम से पहचाना जाता है । सर्व प्रथम एस.टी.डी. सुविधा लखनऊ–कानपुर के मध्य प्रारम्भ हुई । एस.टी.डी. को क्रियान्वित करने के लिए सबसे पहले प्रोक्ता संकेतांक शून्य '0' डायल करें तत्पश्चात् वांछित शहर का नम्बर, जैसे 215397 ।

आई.एस.डी.

एस.टी.डी. सुविधा के द्वारा केवल एक राष्ट्र के अन्तर्गत ही सम्पर्क स्थापित किया जा सकता है। विदेष में रहने वाले लोगों से सम्पर्क करने के लिए आई.एस.डी. सुविधा अनिवार्य है। आई.एस.डी. से तात्पर्य है। – इन्टरनेशनल सबस्क्राइबर ट्रैंक डायलिंग अर्थात् अन्तर्राष्ट्रीय काल डायलिंग द्वारा सम्पर्क। इसके लिए दो शून्य '00' डायल का कोड है। विदेशों से सम्पर्क करने के लिए सर्वप्रथम '00' डायल करना पडेगा, फिर राष्ट्र का कोड, जैसे यू.के. का कोड है 44, उसके बाद शहर का कोड, जैसे लन्दन का 1 कोड है इसके बाद वांछित व्यक्ति का नम्बर। इस प्रकार स्थिति आती है। –00441––

वीडियोफोन :

वीडियोफोन, दूरसंचार के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। इस यंत्र के माध्यम से केवल व्यक्ति की आवाज ही नहीं सुनी जाती बल्कि उसका चित्र भी दिखाई पडता है। इस प्रक्रिया में टेलिफोन से एक कैमरा और वीडियोस्क्रीन जुडी रहती है। टेलीफोन नम्बर मिलाते ही कैमरा चालू हो जाता है और विद्युत संकेतों के माध्यम से आवाज एवं चित्र लक्ष्य व्यक्ति तक पहुँचाए जाते हैं।

सेल्युलर टेलीफोन :

सेल्युलर टेलीफोन वॉकी टॉकी के आकार का यन्त्र है। इसे सेल्युलर मोबाइल रेडियो भी कहते हैं। सेल्युलर टेलीफोन पद्धति में एक बडे क्षेत्र को सैल्स या छोटे–छोटे क्षेत्रों में विभाजित कर दिया जाता है। इनमें से हर एक क्षेत्र का अपना अलग ट्रांसमीटर होता है। इस ट्रांसमीटर से सेल्युलर फोन सेवा के उपभोक्ता के पास उपलब्ध एक विशेष एन्टीना युक्त टेलीफोन जुडा होता है। इस टेलीफोन का बटन दबाते ही उपभोक्ता का सम्पर्क ट्रान्समीटर से होता है, जहॉ बेस–स्टेशन पर कम्प्यूटर नियन्त्रित प्रणाली द्वारा इसे इच्छित नम्बर से रेडियो तरंगो के माध्यम से जोडा जाता है।

श्राव्य माध्यम :

रेडिओ श्राव्य माध्यम है। जब हम संचार का नाम लेते है तो उसका सीधा अर्थ भाषा ही ही है। क्योंकि भाशा ही संचार का माध्यम है। हिंदी में जब समाचार बुलेटिन दिए जाते है तब वे अत्यंत सरल तथा प्रसारण के लिए बनाई गयी भाषा शैली में होने चाहिए। आकाशवाणी पर जब हम हिंदी में समाचार प्रस्तुत करते है तो उसके लिए समाचार रोचक, प्रभावपूर्ण, रसमय, कथात्मक बनाए जाते है।

दृभय श्राव्य :

टेलिव्हिजन यह एक प्रचार–प्रसार माध्यम हिंदी के दर्शक, श्रोता के लिए तथा सुनकर घर–घर बच्चों से लेकर बुढे तक हिंदी बोलने की कोशिश करते है।

इंटरनेट :

इंटरनेट में हिंदी का स्थान महत्वपूर्ण है। इंटरनेट एक जनमाध्यम है। यह केवल अंग्रेजी में होता है। हम उसे अपनी सरलता के लिए हिंदी में परिवर्तित कर सकते है। क्योंकि हिंदी बोलने तथा समझनेवालों की संख्या अंग्रेजींसे करोंडो के फिगर में अधिक है। हिंदी का प्रयोग हर क्षेत्र में हर जगह होना चाहिए। जिससे हिंदी का प्रयोग हर क्षेत्र में हर जगह होना चाहिए। जिससे हिंदी का सम्मान बढेगा

जब तक महादेव के मंदिर में रहेगा नंदी,
नारी के माथेपर रहेगी बिंदी
तबतक इस दुनिया में राज करेगा हिंदी।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. जनसंचार एवं पत्रकारिता – प्रो. रमेश जैन
2. प्रयोजनमूलक हिंदी प्रक्रिया और स्वरूप – डॉ. कैलाशचंद भाटिया, तक्षशिला प्रकाशन नई दिल्ली.
3. प्रयोजनमूलक हिंदी स्वरूप एवं व्याप्ती – सौ. शैलजा पाटील, फडके प्रकाशन, कोल्हापूर.
4. प्रयोजनमूलक हिंदी विविध परिदृष्य – डॉ. रमेशचंद्र त्रिपाठी, 'अलका', प्रकाशन कानपूर.
5. प्रयोजनमूलक हिंदी – लक्ष्मीकांत पांडेय, डॉ. प्रमिला अवस्थी, आशिश प्रकाशन, कानपूर.
6. कम्प्यूटर के भाषिक अनुप्रयोग – विजयकुमार मल्होत्रा, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली.
7. प्रयोजनमूलक हिंदी (विविध संदर्भ) – संपादक, कौशल पाण्डेय, बलजिंदर कौर रंधवा.
8. नए जन संचार माध्यम और हिंदी – संपादक सुधीश पचौरी, अचला शर्मा.